12-5-2001

लक्ष्य की सम्पन्नता के लिए दृढ़ता और परिपक्वता की आवश्यकता

आज बापदादा के पास पहुँची तो बापदादा का बहुत मीठे रूप से मिलन हुआ। क्या देखा, बापदादा लाइट की पहाड़ी पर खड़े हैं और बापदादा के चारों ओर से भिन्न-भिन्न शक्तियों के भिन्न-भिन्न रंग की लाइट चारों ओर फैल रही हैं। यह रूप तो बहुत दिल को आकर्षित करने वाला था। आप भी अपने दिल में रूहानी आर्टिस्ट बन सामने लाइये तो ऐसा ही लगता कि ८. मधुरता ७. स्नेह ६. शक्ति और ५. विश्व सेवा, सबका स्वरूप था। मैं भी धीरे-धीरे सुन्दर अनुभव करती आगे बढ़ती गई। कुछ समय बाद बाबा बोले, बच्ची क्या देख रही हो! वर्तमान समय हर बच्चे को ऐसे मास्टर सर्वशक्तिवान रूप में अपनी रूहानी शक्तियों को स्व प्रति और सर्व के प्रति कार्य में लगाना है तब विश्व परिवर्तन, विश्व कल्याण होगा।

उसके बाद बाबा ने समाचार पूछा, मैंने सुनाया कि बाबा अब ८८ मई की तारीख आ गई है तो सब तरफ आपकी श्रीमत प्रमाण संस्कार परिवर्तन की लहर फैली हुई है। सब तरफ योग भट्ठियां बहुत अच्छी चल रही हैं।

सबका अटेन्शन इस बात पर है कि परिवर्तन करना ही है। मधुबन में सर्व स्थानों में सबने रिज़ल्ट की चिटकियां लिखी हैं। उसमें अटेन्शन तो सबका रहा है लेकिन परसेन्टेज किसकी कितनी, किसकी कितनी है। फारेन में भी चारों ओर बहुत अच्छा अटेन्शन है। काल आफ टाइम वालों को भी यह बाबा का दिया हुआ काम बहुत याद है। बापदादा बहुत प्यार से सुन रहे थे और ऐसे लग रहा था जैसे सब बच्चों को बाबा दिल से प्यार दे रहे हैं। उसके बाद बाबा बोले, बापदादा भी सब तरफ की रिज़ल्ट अटेन्शन की देख हर्षित हो रहे हैं लेकिन आगे उसमें सम्पन्नता लाने के लिए और दृढ़ता परिपक्वता लानी है। परसेन्टेज़ को बढ़ाना है क्योंकि अब समय प्रमाण चारों प्रकार की हलचल और बढ़ती जानी है:- १. प्रकृति की २. वायुमण्डल दूषित की ३. माया के नये-नये प्रकार की बातों की। ४. आत्माओं के आपसी सम्बन्धों की। इसलिए अब हर समय बच्चों को रूहानी लाइट के कार्ब में सेफ रहना है। लाइट-माइट हाउस बन स्व परिवर्तन द्वारा औरों प्रति भी परिवर्तन के वायुमण्डल की लहर फैलानी है, जो एक दो को देख औरों में भी स्वत: सहज बल मिले। बापदादा आज विशेष हर बच्चे को स्व-परिवर्तन द्वारा सर्व ब्राह्मणों में संस्कार परिवर्तन का सहयोग दे, उमंग-उत्साह बढ़ाने के कार्य में निमित्त बनने की जिम्मेवारी का ताज पहना रहे हैं। बोलो, यह ताज धारण करने की हिम्मत है ना? बस यही हर समय संकल्प हो कि इस कार्य में ''पहले मैं''। मुझे ही निमित्त बनना है, सम्पन्न करना है। किसी भी बातों को देखना नहीं है। आगे बढ़ना है, बढ़ाना ही है। इसके बाद बाबा को इस वर्ष में और आगे होने वाले प्रोग्राम्स का समाचार सुनाया। बाबा बोले, बच्ची प्रोग्राम्स तो सब अच्छे बनाये हैं। अच्छे उमंग-उत्साह से सर्व के स्नेह से सम्पन्न करो, इसमें प्रत्यक्षता स्पष्ट सामने आयेगी।

उसके बाद बाबा को जगदीश भाई का समाचार सुनाया। सुनते ही बाबा के नयनों में जगदीश जी प्रति स्नेह समा गया और बहुत दिल व जान से स्नेह दे रहे थे। फिर बोले बच्चे ने दधीचि ऋषि समान अपनी हड्डियां सेवा में लगा

दी। शरीर की नॉलेज में और सेवा के उमंग में बैलेन्स कम रखा इसलिए बीमारी बढ़ गई और सहन करना पड़ता है। बापदादा सभी बच्चों को कहते हैं डबल नॉलेजफुल बनो - शरीर और सेवा के। लेकिन आसक्त होकर नहीं, साक्षी होकर बैलेन्स रखो। फिर भी बच्चे ने सेवा दिल से की है। सेवा के नये-नये प्लैन्स और प्रैक्टिकल करने के निमित्त बने हैं, पुण्य जमा है। इसलिए सर्व का स्नेह, दुआयें, प्यार रिटर्न में मिल रहा है।